

This is a highly detailed and colorful illustration of the cosmic ocean scene from Hindu mythology. Lord Vishnu, with his characteristic blue skin, is reclining on the multi-headed serpent Shesha. He is adorned with yellow and orange robes and jewelry. The serpent Shesha has multiple heads, each with a crown. The background is a dramatic sky with a large, cracked moon, a bright sun, and numerous planets and moons. The ocean is turbulent with waves, and the foreground shows a rocky shore with two figures in a meditative pose. The entire scene is framed by a decorative border with small panels depicting various scenes.

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 4 (चतुर्थ अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: प्रलय के चार प्रकार
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को सम्बोधित करते हुए; सूत गोस्वामी की नैमिषारण्य के ऋषियों को कही कथा के भीतर
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; तथा नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थान: गंगा का तट, जहाँ परीक्षित अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, नैमिषारण्य के वन-आश्रम के भीतर
- मुख्य विषय-वस्तु: प्रलय के चार प्रकार — नित्य (निरन्तर), नैमित्तिक (आवधिक), प्राकृतिक (तात्त्विक) तथा आत्यन्तिक (शाश्वत) — और भगवान् की महिमा-श्रवण की अविनाशी शरण
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 4, श्लोक 1-43
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

ब्रह्मा का दिन और रात्रि

श्रीशुकदेव राजा के समक्ष काल का माप रखते हुए आरम्भ करते हैं। सूक्ष्मतम परमाणु से लेकर ब्रह्मा की आयु के विशाल दो परार्धों तक के काल-विभाजनों का वर्णन पहले कर चुकने के पश्चात्, वे अब एक कल्प — सृष्टि का एक चक्र — तथा लय — प्रलय के काल — की अवधि को उघाड़ते हैं। चारों युगों के एक सहस्र चक्र, वे कहते हैं, ब्रह्मा का एक दिन बनाते हैं — और उस दिन में क्रमशः चौदह मनु शासन करते हैं।

चतुर्युगसहस्रं तु ब्रह्मणो दिनमुच्यते ।

स कल्पो यत्र मनवश्चतुर्दश विशाम्पते ॥ २ ॥

catur-yuga-sahasram tu brahmaṇo dinam ucyate sa kalpo yatra manavaś caturdaśa viśām-pate

अर्थ: चारों युगों के एक सहस्र चक्र को ब्रह्मा का एक दिन कहा जाता है; इसे कल्प कहते हैं, जिसमें चौदह मनु शासन करते हैं, हे प्रजापालक। (स्कन्ध 12, अध्याय 4, श्लोक 2)

प्रत्येक ऐसे दिन के अन्त में, श्रीशुकदेव समझाते हैं, उतनी ही दीर्घ रात्रि आती है — नैमित्तिक, अर्थात् आवधिक, प्रलय। इस रात्रि में तीनों लोक समेट लिए जाते हैं; भगवान् नारायण, विश्व के रचयिता, समस्त सृष्टि को अपने में खींच लेते हैं और अनन्त — शाश्वतता के सर्प — की शय्या पर विश्राम करते हैं, जबकि ब्रह्मा भी निद्रा में लीन हो जाते हैं। यह समस्त वस्तुओं का अन्त नहीं, अपितु भगवान् के भीतर उनका रात्रि-विश्राम है।



नैमित्तिक प्रलय — ब्रह्मा की रात्रि — में भगवान् नारायण तीनों लोकों को अपने में समेटकर शाश्वतता के सर्प अनन्त की शय्या पर विश्राम करते हैं, जब सृष्टि शयन करती है (श्लोक 3-4)।

तत्त्वों का प्रलय

जब अन्ततः ब्रह्मा की पूर्ण आयु — दो परार्ध — व्यतीत हो जाती है, तब एक कहीं विराट् विघटन आरम्भ होता है: प्राकृतिक, अर्थात् तात्त्विक, प्रलय, जिसमें पदार्थ के मूल तत्त्व भी अपने अव्यक्त स्रोत में लौट जाते हैं। श्रीशुकदेव इसे विस्मयकारी रेखाओं में चित्रित करते हैं। सौ वर्षों तक वर्षा नहीं होती; भूखी पृथ्वी अन्न से रहित हो जाती है, और प्राणी नष्ट हो जाते हैं। सूर्य भयंकर तेज से प्रज्वलित होकर समुद्रों, पृथ्वी तथा प्राणियों के शरीरों का समस्त जल पी जाता है। भगवान् संकर्षण के मुख से प्रकट होकर वायु से प्रचण्ड हुई अग्नि लोकों को इतना झुलसाती है कि ब्रह्माण्ड जले हुए गोबर के पिण्ड-सा दहकने लगता है; फिर प्रलयकालीन प्रचण्ड वायु चलती है, और अनेक रंगों के विशाल मेघ सौ वर्षों तक बरसते हैं, जब तक कि सम्पूर्ण विश्व एक ही जल-राशि में डूब नहीं जाता।

तब, एक-एक कर, तत्त्व अपने गुणों को अर्पित कर अपने कारणों में लीन हो जाते हैं। जल पृथ्वी के गुण गन्ध को ग्रहण कर लेता है, और पृथ्वी लीन हो जाती है; अग्नि जल के गुण रस को ग्रहण करती है, और जल लीन हो जाता है; वायु अग्नि के गुण रूप को ग्रहण करती है, और अग्नि लीन हो जाती है; आकाश वायु के गुण स्पर्श को ग्रहण करता है, और वायु लीन हो जाती है; और अहंकार आकाश के गुण शब्द को ग्रहण कर लेता है। अहंकार महत्तत्त्व में खिंच जाता है, महत्तत्त्व तीनों गुणों में, और गुण, काल से प्रेरित होकर, अव्यक्त प्रकृति में — जो अनादि, अपरिवर्तनीय तथा अविनाशी है — पूर्ण साम्यावस्था में लौट जाते हैं।



तात्त्विक प्रलय में पाँचों तत्त्व अपने गुणों को एक-दूसरे में अर्पित करते हैं — पृथ्वी जल में, जल अग्नि में, अग्नि वायु में, वायु आकाश में — जब तक कि सब कुछ अव्यक्त प्रकृति में न लौट जाए (श्लोक 14-22)।

शाश्वत प्रलय

अब श्रीशुकदेव लोकों के प्रलय से मुड़कर स्वयं अज्ञान के प्रलय की ओर आते हैं — आत्यन्तिक, अर्थात् शाश्वत, प्रलय, जो मोक्ष से कम कुछ नहीं। जिसका आरम्भ और अन्त है, वे शिक्षा देते हैं, वह असत् है, क्योंकि उसका अपने कारण से पृथक् कोई अस्तित्व नहीं; केवल शुद्ध चैतन्य, जो बुद्धि, इन्द्रियों तथा उनके विषयों का आधार है, सचमुच प्रकाशित होता है। जैसे प्रकाश, नेत्र तथा रूप अग्नि से भिन्न नहीं, वैसे ही मन और इन्द्रियाँ ब्रह्म से — एकमात्र सत्य से — भिन्न नहीं। यह विश्व ब्रह्म में वैसे ही प्रकट और विलीन होता है जैसे आकाश में मेघ प्रकट और विलीन होते हैं।

इसे सजीव करने के लिए ऋषि मेघ और सूर्य का अपना दीप्तिमान बिम्ब देते हैं। जैसे मेघ, यद्यपि स्वयं सूर्य से ही उत्पन्न, उसी नेत्र से सूर्य को छिपा देता है जिसे सूर्य प्रकाशित करता है, वैसे ही अहंकार — जो ब्रह्म से उत्पन्न और ब्रह्म से प्रकाशित है — आत्मा और ब्रह्म-साक्षात्कार के बीच खड़ा हो जाता है। और जिस क्षण वह मेघ आत्म-विचार से छिन्न होता है, नेत्र पुनः सूर्य को देखता है; आत्मा परमात्मा से अपनी एकता को जान लेती है। जब इस विवेक-रूपी छुरे से माया का उत्पाद अहंकार का मिथ्या बन्धन काट दिया जाता है और मनुष्य साक्षात्कृत आत्मा में स्थित हो जाता है, वही, श्रीशुकदेव कहते हैं, शाश्वत प्रलय कहलाता है।

यदैवमेतेन विवेकहेतिना

मायामयाहङ्करणात्मबन्धनम् ।

छित्त्वाच्युतात्मानुभवोऽवतिष्ठते

तमाहुरात्यन्तिकमङ्ग सम्प्लवम् ॥ ३४ ॥

*yadaivam etena viveka-hetinā māyā-mayāhaṅkaraṇātma-bandhanam chittvācyutātmānubhavo
'vatiṣṭhate tam āhur ātyantikam aṅga samplavam*

अर्थ: जब इस विवेक-रूपी छुरे से मनुष्य माया के उत्पाद अहंकार-जनित आत्म-बन्धन को काटकर अच्युत आत्मा के साक्षात्कार-अनुभव में स्थित हो जाता है, तब मनीषी उसे शाश्वत (आत्यन्तिक) प्रलय कहते हैं, हे प्रिय। (स्कन्ध 12, अध्याय 4, श्लोक 34)



श्रीशुकदेव अहंकार की तुलना उस मेघ से करते हैं जो, यद्यपि सूर्य से ही उत्पन्न, नेत्र से सूर्य को छिपा देता है — जब तक कि आत्म-विचार उसे छिन्न न कर दे और आत्मा ब्रह्म से अपनी एकता को न देख ले (श्लोक 32-34)।

निरन्तर प्रलय

अन्त में श्रीशुकदेव नित्य, अर्थात् निरन्तर, प्रलय का नाम लेते हैं — चारों में सबसे शान्त और सबसे अविरल। जो वस्तुओं के सूक्ष्म स्वरूप को देखते हैं, वे कहते हैं, वे जानते हैं कि ब्रह्मा से लेकर नीचे तक समस्त प्राणियों की सृष्टि और संहार प्रत्येक क्षण चलता रहता है। नदी के सतत प्रवाह या दीपक की लौ के थरथराने की भाँति, शरीर तथा समस्त सृष्ट वस्तुएँ काल की धारा के नीचे क्षण-क्षण में इतनी अगोचर रीति से घिसती जाती हैं कि हम उसे नहीं देख पाते, जैसे हम आकाश में तारों की सतत गति को नहीं देख पाते। इस प्रकार नित्य, नैमित्तिक, प्राकृतिक तथा आत्यन्तिक प्रलय मिलकर काल के सम्पूर्ण मार्ग को प्रकट करते हैं।

सागर पार करने की एकमात्र नौका

राजा को विश्व-प्रलय की भव्यता में से ले जाकर, श्रीशुकदेव यह सब एक अकेली, कोमल शिक्षा में समेट देते हैं। ये, वे कहते हैं, भगवान् नारायण — विश्व के रचयिता तथा समस्त प्राणियों के आश्रय — की लीलाओं का संक्षिप्त कथन-मात्र हैं, वे महिमाएँ इतनी विशाल कि स्वयं ब्रह्मा भी उन्हें पूर्णतः नहीं कह सकते। और अनेक क्लेशों की दावाग्नि से संतप्त तथा जन्म-मृत्यु के प्रायः अलंघ्य सागर को पार करने के अभिलाषी आत्मा के लिए भगवान् की कथाओं के अमृत के सतत सेवन के अतिरिक्त कोई अन्य नौका नहीं।

संसारसिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षो-
नान्यः प्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य ।
लीलाकथारसनिषेवणमन्तरेण
पुंसो भवेद् विविधदुःखदवार्दितस्य ॥ ४० ॥

*saṁsāra-sindhum ati-dustaram uttītīṣor nānyaḥ plavo bhagavataḥ puruṣottamasya līlā-kathā-
rasa-niṣevanam antareṇa puṁso bhaved vividha-duḥkha-davārditasya*

अर्थ: अनेक दुःखों की दावाग्नि से झुलसे तथा संसार के प्रायः अलंघ्य सागर को पार करने के इच्छुक मनुष्य के लिए भगवान् पुरुषोत्तम की लीला-कथाओं के अमृत के सेवन के अतिरिक्त कोई अन्य नौका नहीं। (स्कन्ध 12, अध्याय 4, श्लोक 40)



जन्म-मृत्यु के असीम सागर के समक्ष श्रीशुकदेव एक अचूक नौका प्रस्तुत करते हैं — भगवान् की अपनी कथाओं का अमृत, एकमात्र नौका जो आत्मा को पार ले जाती है
(श्लोक 40)।

श्रीशुकदेव इसी शास्त्र की पावन परम्परा का सूत्रपात करते हुए अध्याय का समापन करते हैं: अमर भगवान् नारायण ने पहले भागवत की शिक्षा सन्त नारद को दी, नारद ने श्रीशुकदेव के अपने पिता वेदव्यास को, और वेदव्यास ने, आनन्द से परिपूर्ण होकर, स्वयं श्रीशुकदेव को यह संहिता सिखाई — जो मूल्य में वेदों के तुल्य है। और, वे परीक्षित से कहते हैं, वही सूत जो निकट बैठे हैं, एक दिन नैमिषारण्य वन में दीर्घ सत्र के लिए एकत्रित ऋषियों की महती सभा को इसे सुनाएँगे। एक ही श्लोक में सम्पूर्ण भागवत की रूपरेखा शान्त भाव से प्रकट हो जाती है, जो मरणासन्न राजा की कथा को उसी कथन से जोड़ देती है जिसे हम अब सुनते हैं।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. जिसका आरम्भ है उसका अन्त अवश्य है। जिसका आरम्भ और अन्त है, वह अपने स्वभाव से अनित्य और अन्ततः असत् है; केवल अपरिवर्तनीय आत्मा टिकती है। इसे समझना ही क्षणभंगुर पर से अपनी पकड़ ढीली करना है (श्लोक 23-28)।

2. प्रलय के चार मुख हैं। काल निरन्तर, आवधिक, तात्त्विक तथा अन्तिम रूप से कार्य करता है; वही नियम जो ब्रह्माण्ड का अन्त करता है, एक अकेले शरीर को क्षण-क्षण घिसता है। अनित्यता कोई दुर्घटना नहीं, अपितु सृष्टि की वास्तविक लय है (श्लोक 35-38)।

3. अहंकार सूर्य के आगे का मेघ है। जो आत्मा से आत्मा को छिपाता है वह दूरी नहीं, अपितु हमारा अपना अहंकार है, जो स्वयं ब्रह्म से ही उत्पन्न है; विचार उसे छिन्न कर देता है, और आत्मा अपने ही प्रकाश को देख लेती है (श्लोक 32-34)।

4. हरि-कथा ही एकमात्र नौका है। दुःख के सागर में कोई दर्शन या प्रयास नौका के रूप में पर्याप्त नहीं; निश्चित पार-गमन है भगवान् की महिमाओं का प्रेमपूर्वक, सतत सेवन (श्लोक 40)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

अन्तों के इस अध्याय में एक विचित्र सान्त्वना छिपी है। श्रीशुकदेव हमें सूर्यों को बुझते, समुद्रों को सूखते, स्वयं तत्त्वों को अपने स्रोत में लौटते हुए दिखाते हैं — अनित्यता का ऐसा विराट् आकार कि उसके सामने हमारी चिन्ताएँ बौनी हो जाती हैं। फिर भी वे हमें उस विशालता की ठण्ड में नहीं छोड़ते। ब्रह्माण्ड को प्रत्येक स्थायित्व से रिक्त करके, वे हमारे हाथों में वह एक वस्तु रख देते हैं जिसे कोई प्रलय नहीं घोल सकता: भगवान् की कथा। यह वही गति है जिससे हम इन कथाओं में मिल चुके हैं — पहले ढील, फिर उपहार। प्रलय पर ध्यान करना विषादपूर्ण नहीं, अपितु मुक्तिदायी है: यह हृदय को सिखाता है कि जो सदा फिसलता ही जा रहा था उससे चिपकना छोड़ दे, और उसी से चिपके जो टिकता है। बुद्धिमान् आत्मा, अग्नि और जलप्रलय के विषय में सुनकर, निराश नहीं होती; वह बस उस नौका में चढ़ जाती है जिसकी ओर श्रीशुकदेव संकेत करते हैं, और अभी से पार करना आरम्भ कर देती है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज कुछ क्षण शान्त बैठिए और इस अध्याय के सत्य को हृदय में उतरने दीजिए: जो कुछ भी आप देख सकते, धारण कर सकते, या खोने से डरते हैं, वह पहले से ही काल की धारा के नीचे कण-कण घुल रहा है। इससे भयभीत होने के स्थान पर इसे कोमलता से अपने को मुक्त करने दीजिए। फिर वह एक अविनाशी शरण ग्रहण कीजिए जो यह अध्याय प्रस्तुत करता है — भगवान् की कथा का अमृत। श्रीकृष्ण की एक लीला पढ़िए या स्मरण कीजिए, अथवा केवल ध्यानपूर्वक एक निश्चित संख्या में “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का जप कीजिए, और उस अचूक नौका में पैर रखिए। इस छोटे से दैनिक पार-गमन में आप इस अध्याय की सम्पूर्ण शिक्षा का अभ्यास करते हैं — नश्वर को छोड़ना, और शाश्वत को थामना।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का चतुर्थ अध्याय भागवत का अनित्यता पर भव्य चिन्तन है — और अनित्यता का आशा में शान्त रूपान्तरण। श्रीशुकदेव गोस्वामी मरणासन्न राजा के समक्ष प्रलय के चार प्रकार रखते हैं: समस्त वस्तुओं का निरन्तर क्षय, नारायण के भीतर लोकों का रात्रि-विश्राम, पदार्थ का अपने स्रोत में तात्त्विक विघटन, तथा आत्म-साक्षात्कार के प्रकाश में अज्ञान का शाश्वत प्रलय। सूखते समुद्रों और लौटते तत्त्वों के विस्मयकारी बिम्बों के नीचे एक ही स्थिर शिक्षा बहती है: कि जिसका आरम्भ है उसका अन्त अवश्य है, अतः हृदय को उसी में स्थिर करना चाहिए जिसका न आदि है न अन्त। और अध्याय के अन्तिम श्लोकों में उस स्थिर लंगर का नाम लिया गया है — भगवान् की अपनी कथा का अमृत, जन्म-मृत्यु के अलंघ्य सागर की एकमात्र नौका, जो नारायण, नारद तथा व्यास से होती हुई नैमिषारण्य के ऋषियों तक, और हम तक पहुँची है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, चतुर्थ अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-4-pralay-ke-char-prakar-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट